विचार बिन्दु

भूख प्यास से जितने लोगों की मृत्यु होती है उससे कहीं अधिक लोगों की मृत्यु ज़्यादा खाने और ज़्यादा पीने से होती है।

–कहावत

मेडिकल टूरिज़्म क्षेत्र में विपुल संभावनाओं के दोहन की जरुरत

मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में आज भारत दुनिया के देशों की पसंदीदा डेस्टिनेशन बनता जा रहा है। भारत की आज इस क्षेत्र में शीर्ष 6 देशों में गिनती होने लगी है। दरअसल चिकित्सा क्षेत्र में भारत ने विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवा को लेकर अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई है। हमारे देश के 38 चिकित्सा संस्थानों को जेसीआई द्वारा मान्यता प्राप्त है तो चैन्नई, मुंबई, बैंगलोर, अहमदाबाद और दिल्ली मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में अपनी इंटरनेशनल पहचान बना चुके हैं। आज बैंगलोर आईटी राजधानी के साथ ही वैलनेस सेंटर के रुप में अपनी पहचान बना चुका है। एक मोटे अनुमान के अनुसार चिकित्सा, तंदुरुस्ती और आईवीएफ चिकित्सा के लिए दुनिया के 78 देशों से 2 मिलियन लोग उपचार के लिए हर साल आने लगे हैं। 2020 में भारत में चिकित्सा पर्यटन क्षेत्र से करीब 9 बिलियन अमेरिकी डॉलर की आय हुई है तो इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के अनुसार 2026 तक मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र से लगभग डेढ़ गुणी 13 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान लगाया जा रहा है। देखा जाए तो मेडिकल टूरिज्व के क्षेत्र में भारत के आकर्षण का केन्द्र बनने के कई प्रमुख कारण है। एक तो भारत में चिकित्सा सेवाएं जिसमें मेडिकल और पेरामेडिकल दोनों सेवाएं सस्ती होने के साथ ही इंटरनेशनल लेवल की है। दूसरी यह कि भाषा को लेकर भी कोई समस्या नहीं हैं क्योंकि भारत के चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े लोग धाराप्रवाह अंग्रेजी बोल भी लेते हैं तो समझ भी जाते हैं। इसके साथ ही चिकित्सा के क्षेत्र में भारत की परंपरागत छवि का भी सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अब आवश्यकता इस इमेज को बनाए रखते हुए इस क्षेत्र का दोहन करते हुए अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित कर विदेशी आय भी प्राप्त करना है।

देखा जाए तो भारतीय डॉक्टरों की इंटरनेशनल स्तर पर अपनी पहचान है। आज दुनिया के देशों में खासतौर आईपीडी देशों में 75 हजार भारतीय डॉक्टर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इनमें से 15 हजार से अधिक डॉक्टर्स तो अमेरिका में ही अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसी तरह से भारतीय पेरामेडिकल कार्मिक खासतौर से नर्सिंग क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान है। एक समय था जब केरल की नर्सों की दुनिया के अधिकांश देशों में मांग देखी जाती थी। आज भी भारतीय मेडिकल और पेरामेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोगों के व्यवहार, कार्यशैली, काम के प्रति प्रतिवद्धता और उच्च नैनिक मानदंडों की पालना के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। जब विदेशों में ही भारत के मेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोगों की अलग पहचान है तो दूसरी और देश के प्रमुख चिकित्सा संस्थानों ने अपनी सेवाओं के बदाकलत पहचान बनाई है।

दरअसल विदेशों से मेडिकल टूरिज्म पर आने वाले लोगों के सामने विदेशी इंश्योरेंस कंपनियों द्वारा केशलेस या इंश्योरेंस सुविधा प्राप्त करना परेशानी का कारण है। ऐसे में मेडिकल क्षेत्र में इंश्योरेंस करने वाले संस्थानों से समन्वय व संवाद कायम कर सुविधाएं प्राप्त करनी होगी। इसके साथ ही सरकार को भारतीय मेडिकल सुविधाओं की विदेशों में योजनावद्ध तरीके से मार्केटिंग करनी होगी ताकि भारत को दुनिया का प्रमुख मेडिकल डेस्टिनेशन बनाया जा सके।

विदेशियों के भारत में मेडिकल टूरिज्म के प्रति आकर्षण के अन्य कारणों के साथ ही भारत की समग्र चिकित्सा पद्धति भी एक कारण है। आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, हौम्योपैथी, यूनानी, तिब्बती और सिद्ध पद्धति की चिकित्सा सुविधा में विशेषज्ञता हासिल होने से लोग भारत को प्राथमिकता देने लगे हैं। अन्य देशों की तुलना में हमारे यहां चिकित्सा सुविधाएं सस्ती है तो सेवाएं भी इंटरनेशनल स्तर की होने से लोग आकर्षित होने लगे हैं। एक ही स्थान पर बहुआयामी चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो जाती है। देखा जाए तो आज दुनिया के देशों में मानसिक बीमारियों की अधिकता है और भारतीय परंपरागत चिकित्सा पद्धति और योग ध्यान आदि के माध्यम से मानसिक विकारों का आसानी से ईलाज हो सकता है। योग के महत्व को तो अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकारा जा चुका है। इसके साथ ही आधुनिकतम चिकित्सा पद्धति में भी भारतीय चिकित्सकों को महारत हासिल होती जा रही है। अभी हाल ही में कोविड के दौरान भारत ने जिस तरह से दवा और टीके उपलब्ध कराकर दुनिया के देशों में अपना लोहा मनवाया है उससे लोगों का और अधिक विश्वास बढ़ा है। जहां तक रोगनिरोधक टीकों का प्रश्न है उनकी उपलब्धता और वितरण में भारत दुनिया के देशों में शीर्ष पर है।

मेडिकल टूरिज्म का सीधा सीधा अर्थ यह है कि जब कोई अपने ईलाज के लिए किसी दूसरे देश में जाते हैं तो यह मेडिकल टूरिज्म कहलाता है। वैसे यह माना जाता रहा है कि मेडिकल टूरिज्म के रुप में फ्रांस सबसे अग्रणी देश है तो सिंगापुर और थाईलेंड भी दुनिया के देशों के पंसदीदा स्थान है। अब मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में हमारें देश की ओर लोगों का झुकाव होता जा रहा है। ऐसे में सरकार को भी मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस प्रयास करने होंगे। इसके लिए सबसे पहले तो मेडिकल वीजा व्यवस्था को सरल और सुगम बनाना होगा। इसके साथ ही इंश्योरेंस सुविधाओं को बेहतर बनाना होगा। दरअसल विदेशों से मेडिकल टूरिज्म पर आने वाले लोगों के सामने विदेशी इंश्योरेंस कंपनियों द्वारा केशलेस या इंश्योरेंस सुविधा प्राप्त करना परेशानी का कारण है। ऐसे में मेडिकल क्षेत्र में इंश्योरेंस करने वाले संस्थानों से समन्वय व संवाद कायम कर सुविधाएं प्राप्त करनी होगी। इसके साथ ही सरकार को भारतीय मेडिकल सुविधाओं की विदेशों में योजनावद्ध तरीके से मार्केटिंग करनी होगी ताकि भारत को दुनिया का प्रमुख मेडिकल डेस्टिनेशन बनाया जा सके। इसके लिए सरकार के साथ ही विदेशों में कार्यरत गैरसरकारी संस्थाओं को आगे आना होगा। जिस तरह से आज भारत प्रमुख पर्यटन केन्द्र बन चुका है ठीक उसी तरह से मेडिकल क्षेत्र में भी लोगों को आसानी से आकर्षित किया जा सकता है केवल और केवल समग्र व समन्वित प्रयास करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 22 जून, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 4:18 तक, हर्षण योग रात्रि 3:31 तक, विष्टि करण सांय 5:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4:18 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग सांय 5:49 से रात्रि 4:18 तक है। भद्रा सांय 5:28 तक रहेगी। आज विनायक चतुरथी है। आज से राष्ट्रीय आषाढ़ मास आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:20 तक, चर 10:46 से 12:24 तक, लाभ-अमृत 12:24 से 3:54 तक, शुभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष
परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक-मांगलिक कार्य में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मीन
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। खान-पान के कारण दु:ख हो सकता है।

'योग फॉर ह्यूमैनिटी'

चिरंतन भारतीय संस्कृति का अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव है योग दिवस

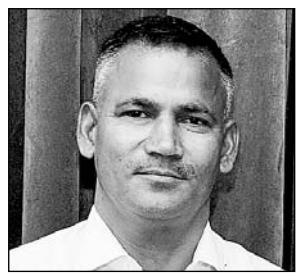

प्रकाश चंद्र शर्मा

चिरंतन भारतीय संस्कृति ने समूचे विश्व को कई सारी सौगातें दी हैं, उनमें से एक सौगात है योग। शरीर और मन की शांति के लिए योग बहुत जरूरी है। योग के महत्व के बारे में लोगों को जागरुक करने और पूरी दुनिया में योग को पहुंचाने के लिए हर साल 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस साल 21 जून बुधवार को 9वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। योग दिवस के दिन दुनियाभर के लोग इकट्ठा होकर जगह-जगह योग दिवस मनाते है। योग शरीर को बहुत फायदे पहुंचाता है। शरीर को निरोगी रखने के लिए योग करना जरूरी है। ऐसा योग शास्त्र कहते है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दिन लोगों में योग के प्रति जागरूकता फैलाने का मकसद है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 की थीम–

आयुष मंत्रालय की ओर से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धांत पर 'वन वर्ल्ड, वन हेल्थ' रखी गई है। इस थीम को आयुष मंत्रालय द्वारा चुना गया है। इसी थीम को ध्यान में रखते हुए पूरी दुनिया में योग दिवस मनाया गया। अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस के दिन हर वर्ष सभी लोग मिलकर स्कूलों, कॉलेज और सांप्रदायिक स्थान, पार्क आदि जगहों पर इकट्ठा होकर योगा कर इस दिन को मनाते हैं। इसके साथ ही योगा के लाभों को लेकर लोगों में जागरूकता फैलाने का काम करते हैं। आइए जाने योग के फायदे और इतिहास के बारे में।

योगा करने के फायदे–

हर दिन योगा करने से आपका जीवन सकारात्मक और मन शांत रहता है। योग मन और शरीर की शांती को प्राप्त करने के लिए आपको शारिरिक और मानसिक तौर पर अनुशासित करता है। तनाव और चिंता को रोकने में मदद करता है और आपको शांत रखता है।

लोग अक्सर शरीर दर्द, कमर दर्द, जोड़ो का दर्द और घुटनों का दर्द आदि परेशानियों से जूझ रहे होते हैं और वर्तमान समय में तो ये आम बात हो गई है। प्रतिदिन योगा करने से आप इन परेशानियों से राहत पा सकते हैं। योगा आपके शरीर को लचीला भी बनाता है।

योगा खून के बहाव में भी सुधार करता है। ट्विस्टिंग पोज़ और योगा आसन शरीर में रक्त का बहाव अच्छा करते हैं, साथ ही साथ रक्त का बहाव भी बढ़ाते है। योगा एड्रिनल ग्रंथियों को विनियमित करने मे भी सहायक होती है। योग से कोर्टिसोल का स्तर कम होता है और प्रतिरक्षा तंत्र को और मजबूत बनाता है। योगा बीमारियों से प्रभावी तौर पर लड़ने के लिए ताकत या उर्जा देता है। योगा ब्लड शुगर कम करने का सबसे प्रभावकारी उपाय है। ये प्रमाणित उपाय है। यह दिमाग को शांत करता है और विशेष चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। योगा से शरिर के अंगों का तनाव दूर होता है। यह शरीर का संतुलन बनाए रखता है और अच्छी नींद देता है।

योग दर्शन में कहा है– ''तंद्रा द्रश्टु: स्वरूपेऽवस्थानम्।'' जब चित का क्लिष्ट और अक्लिश्ट उभय प्रकार की वृतियों का अभाव या निरोध हो जाता है तब दृष्टा-आत्मा का स्व स्वरूप यानि ब्रह्मस्वरुप में स्थित हो जाता है।

योग शब्द को संस्कृत व्याकरण के 'युज' धातु से उत्पन्न हुआ मानते है।

संस्कृत व्याकरण के पाणिनी के गण पाठ में युज धातु तीन प्रकार से प्रयोग में लायी गई है जो इस प्रकार है – 'युज समाधौ' – (दिवादिगणीय) 'युजिर योगे' – (अधदिगणीय) 'युज संयमने' – (चुरादिगणीय) इनमें प्रथम धातु का अर्थ समाधि है, द्वितीय धातु का अर्थ मिलन या संयोग तथा तृतीय धातु का अर्थ संयम है ।

अधिकतर विद्वानों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में योग शब्द का अर्थ प्रथम 'धातु' युज समाधौ से ही निष्पन्न हुआ माना है। महर्षि व्यास भी योग शब्द का अर्थ करते हुए कहा है कि समाधि को ही योग कहते है। 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के युर्जिधातु से हुई है, जिसका अर्थ है– 'सम्मिलित होना' या 'एक होना'। इस एकीकरण का अर्थ जीवात्मा तथा परमात्मा का एकीकरण अथवा मनुष्य के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के एकीकरण से लिया जा सकता है।

'योग' शब्द 'युज' धातु से बना है। संस्कृत व्याकरण में दो युज् धातुओं का उल्लेख है, जिनमें एक का अर्थ जोड़ना तथा दूसरे का मन: समाधि, अर्थात् मन की स्थिरता है। अर्थात् सामान्य रीति से योग का अर्थ सम्बन्ध करना तथा मानसिक स्थिरता करना है। इस प्रकार लक्ष्य तथा साधन के रूप में दोनों ही योग हैं। शब्द का उपयोग भारतीय योग दर्शन में दोनों अर्थों में हुआ है।

अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस का इतिहास–

अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस का प्रस्ताव सबसे पहले भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में रखा था। यह प्रस्ताव 17 सितंबर 2014 में रखा गया था। इस प्रस्ताव पर गौर करने के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस या विश्व योगा दिवस के तौर पर घोषित किया। 2015 में पहला अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस मनाया गया और तब से आज तक ये दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है। इस साल 2023 में 9वां अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस मनाया गया।

बीते दो-तीन वर्षों की बात करें तो पूरा विश्व कोरोना महामारी से गुजर रहा था, ऐसे में आयुष मंत्रालय ने कोरोना और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए 'स्वास्थ्य के लिए योगा' थीम रखी थी।

बीते उन सालों में कोरोना की मार को ध्यान में रखते हुए उन वर्षों की थीम 'मानवता के लिए योगा' का चयन किया गया था। यह विषय अच्छी तरह से दर्शाता है कि महामारी के दौरान योगा ने लोगों के कष्टों को कम करने और कोरोना के बाद भू-राजनीतिक परिदृश्य में भी मानवता की सेवा की है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस से करुणा, दया के माध्यम से लोगों को एक साथ लाना, एकता की भावना को बढ़ावा देना और दुनिया भर के लोगों के बीच लचीलापन पैदा करना।

योग भारत की पांच हजार वर्ष प्राचीन परंपरा है, जो शरीर तथा मन की समरसता को प्राप्त करने के लिए शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों को जोड़ती है।

'योग' शब्द संस्कृत से लिया गया है एवं इसका अर्थ– शरीर तथा चेतना के मिलन का प्रतीकत्व, जुड़ना या एकीकृत होना है। समकालीन समय में, संपूर्ण विश्व में विभिन्न रूपों में इसका अभ्यास किया जाता है तथा इसकी लोकप्रियता में वृद्धि जारी है। जानकारी के मुताबिक इस बार इस साल के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की अगुआई न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की हैं, ये अपने आप में हमारे देश के लिए गर्व की बात है।

–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

मेहंदीपुर बालाजी धाम में यात्रियों से लूट खसोट की शिकायत पर मानवाधिकार आयोग का संज्ञान

जयपुर। राजस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग जयुपर के अध्यक्ष जस्टिस जी.के व्यास ने आस्था का केन्द्र मेहंदीपुर बालाजी धाम में पुलिस व प्रशासन द्वारा यात्रियों को परेशान करने व लूट खसोट करने की शिकायत पर संज्ञान लिया है। राज्य आयोग में वर्ष 2022 लंबित इस प्रकरण में आज परिवादियागण मुरारीलाल, अवनीश वगैरह द्वारा एक लिखित प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया था कि आस्था का केन्द्र मेहंदीपुर बालाजी में यात्रियों को भारी असुविधा ही नहीं बल्कि पुलिस की लूट का शिकार भी होना पड रहा है।

बालाजी मन्दिर को जाने वाले रास्ते में एवं बाजार में दुकानदारों ने एवं ठेलेवालों ने अतिक्रमण कर रखा है।

- **राजस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग जयुपर के अध्यक्ष जस्टिस जी.के व्यास ने संज्ञान लिया**
- **'परिवाद में वर्णित सभी तथ्यों के संबंध में सम्पूर्ण रिपोर्ट आगामी तारीख पेशी से पूर्व आयोग के अवलोकनार्थ प्रस्तुत करें'**

बालाजी मन्दिर को जाने वाले रास्ते में एवं बाजार में दुकानदारों ने एवं ठेलेवालों ने अतिक्रमण कर रखा है। पुलिसवाले इन दुकानदारों एवं ठेलेवालों से वसूली करते है इसलिए इनके खिलाफ किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं करते है। पुलिसवालों एवं लोकल गुंडों द्वारा वाहन इत्यादि को मन्दिर से दो किलोमीटर पहले ही रोक दिया जाता है, ऐसी स्थिति में वृद्धजन, विकलांग, असहाय, बीमार लोगों को दो किलोमीटर पैदल जाना पडता है। प्राईवेट पार्किंग में गाडियों को पार्क करने के लिए बाध्य किया जाता है, जहां पर सौ रूपये पार्किंग शुल्क वसूला जाता है।

परिवाद में यह भी अंकित किया गया है कि मंदिर के रास्ते में पुलिस द्वारा तीन जगह होर्डिंग, बेरीकेट्स लगा रखे है परंतु पुलिस को पैसे देने पर गाडियों को बिना पार्क किये ही मन्दिर तक जाने दिया जाता है। पार्किंग के नाम पर पुलिस ने भारी लूट मचा रखी है। पैसे नहीं देने पर पुलिस द्वारा यात्रियों के साथ मारपीट एवं गालीगलौच की जाती है, विरोध करने पर पुलिस यात्रियों को थाने ले जाती है एवं छोडने के लिए भारी रिश्वत वसूलती है। मन्दिर के पास पैदल यात्रियों एवं वाहनों को जाम लगना आम बात हो गई है। यहां दुर्घटना की आशंका बनी रहती है इसके बावजूद भी यहां पर कोई पुलिसकर्मी एवं ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात नहीं है। अत: उक्त सभी पर कार्यवाही करते हुए यात्रियों के मानव अधिकारों की रक्षा की जाये। राज्य आयोग की खण्डपीठ द्वारा पूर्व में मेहंदीपुर बालाजी में हो रही अव्यवस्थाओं के संबंध में आदेश दिनांक 13.06.2022 से कुल आठ बिन्दुओं पर अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, यातायात, राजस्थान जयपुर, जिला कलक्टर दौसा, जिला कलक्टर करौली तथा जिला पुलिस अधीक्षक दौसा, जिला पुलिस अधीक्षक करौली, आयुक्त, जिला परिषद-दौसा, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी-दौसा, अधीक्षण अभियंता, जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड-दौसा से तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की थी जिसकी पालना करते हुए समय-समय पर आयोग को पालना रिपोर्ट प्राप्त हुई जिसमें आयोग को आस्वस्थ किया गया है कि आयोग के आदेश दिनांक 13.06.2022 की पालना की जा चुकी है। परंतु आज प्राप्त प्रार्थना पत्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि आयोग को जो रिपोर्टें प्रस्तुत की गई है। वे मात्र लीपा-पोती कर प्रस्तुत की गई है। यह आदेश एवं परिवाद मय फोटोग्राफ की प्रतिलिपि के साथ महानिदेशक पुलिस, राजस्थान जयपुर एवं अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, यातायात, राजस्थान जयपुर, जिला कलक्टर दौसा, जिला कलक्टर करौली तथा जिला पुलिस अधीक्षक दौसा, जिला पुलिस अधीक्षक करौली को इस निर्देश के साथ प्रेषित किया जाये कि उक्त परिवाद में वर्णित सभी तथ्यों के संबंध में सम्पूर्ण रिपोर्ट आगामी तारीख पेशी से पूर्व आयोग के अवलोकनार्थ प्रस्तुत करें। जिला कलक्टर, दौसा को आयोग के आदेश दिनांक 06.02.2023 की प्रतिलिपि भी प्रेषित की जाये। जिला कलक्टर, दौसा उक्त आदेश की पालना रिपोर्ट भी आगामी तारीख पेशी पर आयोग के समक्ष प्रस्तुत करें।

उदयपुर के गुलाम अब्बास कत्थेवाला कथौड़ी जनजाति को महाराष्ट्र से राजस्थान लाए

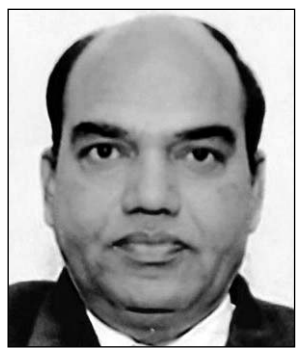

पन्नालाल मेघवाल

महाराष्ट्र के खानदेश जिले की कतकरी कथौड़ी जनजाति कत्था बनाने के काम में निपुण थी। राजस्थान एवं गुजरात के अरावली वन क्षेत्रों में खेर वृक्षों की भरमार थी। अंग्रेजों ने वनों के दोहन हेतु ठेकेदारी व्यवस्था विकसित की। अंग्रेजों की वन-नीति के परिणाम स्वरूप राजस्थान एवं गुजरात में कथौड़ी जनजाति का आगमन हुआ। इन वनों में कत्था बनाने का कार्य पांच ठेकेदार करते थे। दक्षिणी राजस्थान के वनों से कत्था बनाने का काम उदयपुर के गुलाम अब्बास कत्थेवाला करते थे। दक्षिणी राजस्थान से जुड़े गुजरात के वन क्षेत्रों से कत्था बनाने का काम ठेकेदार जीवा सेठ कत्थेवाला, कुर्बान अली सेठ कत्थेवाला, पालीवाल सेठ कत्थेवाला और जमाल सेठ कत्थेवाला करते थे। प्रारंभ में ये ठेकेदार स्वयं महाराष्ट्र के खानदेश जिले में जाकर कतकरी कथौड़ी जनजाति पुरुषों को लाते थे और कत्था निकालने के काम पर लगाते थे। लेकिन यहां कत्था निकालने का काम इतना ज्यादा था कि बाद में इन्हें परिवार सहित रेल में बैठा कर लाने लगे। इनके परिवार को डेरा कहा जाता था। यहां लाकर रेलवे स्टेशन पर इन डेरों का बंटवारा करके अपने साथ ले जाते थे। जीवा सेठ का अधिक प्रभाव था इसलिए वे यहां अधिक डेरों को लाते थे। प्रारंभ में इन कत्था व्यवसायियों ने बड़े पैमाने पर कत्था निर्मित करवा कर मुंबई मार्ग से विदेशों में भिजवाया।

राजस्थान में खानदेश (महाराष्ट्र) से कथौड़ी परिवारों (डेरों) ने सन् 1942 से आना शुरू किया। उदयपुर के गुलाम अब्बास कत्थेवाला बहुत बड़े व्यापारी थे। उदयपुर जिले की झाडोल एवं कोटडा तहसील के जंगलों से कत्था निकालने के लिए उन्हें यहां लाकर बसाया। खानदेश से प्रतिवर्ष राजस्थान आने जाने की समस्या इनकी ही नहीं ठेकेदारों की भी थी। अत: ठेकेदारों ने उन्हें यहीं रहने को प्रेरित किया। जो कथौड़ी परिवार खानदेश जाते थे उनमें से कुछ वहीं रह जाते थे और कुछ नए आ जाते थे। प्रारंभ में उदयपुर के बोहरा ठेकेदार गुलाम अब्बास कत्थेवाले ने लगभग 300 कथौड़ी परिवारों को झाडोल- कोटड़ा भोमट क्षेत्र के गांव बड़ली व महाद क्षेत्र में नियुक्त किया। इन वन क्षेत्रों में ये कथौड़ी परिवार कत्था निर्माण का कार्य करते थे। सन् 1955 तक इन कथौड़ी परिवारों ने कोटडा एवं झाडोल तहसील के वन क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर खेर के वृक्ष काटकर उनकी छाल से कत्था बनाने का कार्य किया। परिणाम यह हुआ कि यहां के जंगलों में खेर वृक्ष लगभग समाप्त हो गए और कत्था निर्माण लगभग बंद हो गया जिससे उनको एक समय रोटी मिलना भी मुश्किल हो गया। उनकी परिस्थितियां पहले से भी बदतर हो गई। उनमें से कई महाराष्ट्र अपने मूल निवास की ओर चले गए। कई रोजगार की तलाश में अन्य गांवों में बस गए।

आजादी के बाद इन्हें बसाने के लिए सरकार ने अलग से कोई योजना नहीं बनाई। समाज कल्याण विभाग की एक योजना के अंतर्गत सन् 1954-55 में लगभग 150 परिवारों के पुनर्वास की व्यवस्था की गई। इसके तहत इन परिवारों को असिंचित बंजर कृषि भूमि डैय्या, अंबासा, अंबावी और आसपास के गांवों में आवंटित की गई। इसके बाद वर्ष तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीया श्रीमती इंदिरा गांधी के शासनकाल में वर्ष 1980-81 में भूमिहीनों को भू-आवंटन योजना के तहत कुछ परिवारों को एक से 5 बीघा तक की कृषि बिलानाम भूमि आवंटित की। लेकिन यह ऊसर एवं बंजर असिंचित भूमि थी। इससे इन कथौड़ी परिवारों ने खेती करने में रुचि नहीं दिखाई। गरीबी के कारण कुछ परिवारों ने इस भूमि को औने-पौने दामों में बेच दिया। कुछ परिवारों ने अपनी भूमि को रहन रख दिया जिसे वे छुड़ा नहीं पाए। कई परिवारों ने इस भूमि पर ध्यान नहीं दिया जिसके कारण अन्य लोगों ने कब्जा कर लिया। वर्तमान में कुछ ही परिवारों के पास यह भूमि उपलब्ध है। प्रारंभ में जब इन्हें राजस्थान लाया गया था तब ये लोग लगभग नंगे रहते थे। पुरुष केवल लंगोटी बांधते थे व औरतें जंघाओं के मध्य एक कपड़ा बांधती थी जिसे फड़का कहा जाता है। बच्चे बिल्कुल नंगे रहते थे। प्रारंभ में पुरुषों को मजदूरी दी जाती थी लेकिन सपरिवार आने के बाद इन्हें मात्र एक पाइली (एक किलो) मक्का या ज्वार, मिर्ची और नमक दिया जाता था। मजदूरी के बदले ठेकेदार इन्हें भरपेट भोजन भी नहीं देते थे। ठेकेदार इनका भरपूर शोषण करते थे। यही कारण रहा कि ये लोग जो भी मिला खाने को विवश हुए। इस समुदाय के कुछ वृद्ध पुरुष बताते हैं कि भूख के कारण ही मजबूरी में हमने मरे हुए पशुओं तथा जंगली जीव जंतुओं को खाना शुरू किया था। जो बाद में एक परंपरा बन गई। इसी प्रकार पर्याप्त कपड़े व साधन सुविधाएं तथा मकान उपलब्ध नहीं होने से यह लोग रात में अलाव जलाकर आसपास पडकर सो जाते थे। जनजाति के होने के बावजूद ये लोग अपने रहन-सहन तथा खान-पान की भिन्नता के कारण राजस्थान की अन्य जनजातियों से घुल- मिल नहीं पाए। परिणाम स्वरूप ये लोग दीन हीन एवं गरीबी की अवस्था जी रहे हैं।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।